महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा की पीएच.डी. (हिन्दी)
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-सारांशिका

"शिवमूर्ति के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन का चित्रण: एक अध्ययन"

शोध-छात्र
मनीष कुमार पाण्डेय
नामांकन संख्या-FOA/1447 (06-07-2017)

शोध-निर्देशिका
प्रो. (डॉ.) शन्नो पांडेय
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कला संकाय
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा (गुजरात)

2025-26

शोध-प्रबन्ध

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन 3-18

प्रथम अध्याय : शिवमूर्ति का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 19-67

1.1 जन्म

1.2 माता-पिता व पारिवारिक परिवेश

1.3 शिक्षा व व्यवसाय

1.4 विवाह

1.5 व्यक्तित्व

1.6 लेखन की प्रेरणा

1.7 कृतित्व

द्वितीय अध्याय : ग्रामीण जीवन की अवधारणा 68-125

2.1 स्वतंत्रता-पूर्व के ग्रामीण जीवन का चित्रण

2.2 स्वातंत्र्योत्तर ग्रामीण जीवन का चित्रण

2.3 21वीं सदी के ग्रामीण जीवन का चित्रण

तृतीय अध्याय : शिवमूर्ति की कहानियों में ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति 126-174

3.1 पारिवारिक स्थिति

3.2 सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति

3.3 आर्थिक स्थिति

चतुर्थ अध्याय : शिवमूर्ति के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति 175-234

4.1 पारिवारिक स्थिति

4.2 सामाजिक व राजनीतिक स्थिति

4.3 आर्थिक स्थिति

पंचम अध्याय : शिवमूर्ति के कथा-साहित्य का शिल्पगत अध्ययन 235-279

5.1 शिवमूर्ति की कहानी कला की विशेषताएं

5.2 शिवमूर्ति की उपन्यास कला की विशेषताएं

5.3 शिवमूर्ति के कथा साहित्य के शिल्प के विविध आयाम

5.4 शिवमूर्ति की कहानी और उपन्यास कला पर पाश्चात्य प्रभाव

उपसंहार 280-288

संदर्भ-ग्रंथ 289-300

परिशिष्ट

“शिवमूर्ति के कथा-साहित्य में ग्रामीण-जीवन का चित्रण: एक अध्ययन”

प्रस्तावना:-

शोध को आसान बनाने, उसे आधारभूत ढांचा देने तथा एक सुगठित संरचना प्रदान करने के लिए अनुसंधान विधि का प्रयोग करना पड़ता है जिससे एक सारगर्भित शोध ग्रंथ बनाया जा सके। शोध-कार्य हेतु बुनियादी स्तर पर वर्णनात्मक विधि का सामान्य रूप में प्रयोग किया जाता है। इस शोध-प्रबंध में शिवमूर्ति की रचनाओं की विलक्षणता को समझने के लिए इसी विधि को अपनाया गया है साथ ही तुलनात्मक और विवरणात्मक शोध-प्रविधि का सहारा भी लिया गया है। शोध पद्धति को मुख्य रूप से गुणात्मक और मात्रात्मक रूपों में वर्गीकृत किया जाता है। जिनके चुनाव का आधार शोध के उद्देश्य, डेटा की प्रकृति और प्रश्नों की गहराई पर निर्भर करता है। गुणात्मक शोध गैर-संख्यात्मक तथ्यों जैसे- साक्षात्कार, अवलोकन आदि का उपयोग करता है, मात्रात्मक शोध संख्यात्मक तथ्यों जैसे- सर्वेक्षण, प्रयोग आदि पर आधारित होता है। शोधार्थी ला दृष्टिकोण इन तथ्यों के आधार पर अपना शोध-प्रबंध तैयार करता है।

शोध पद्धति:- इस शोध प्रबंध में शोध की विभिन्न पद्धतियां प्रयोग में लायी गई हैं। इनका सहारा लेकर शिवमूर्ति के साहित्य का मूल्यांकन किया गया है। शोध के आधार पर ग्रामीण जीवन की अवधारणा को पढ़ने और समझने का ढंग आगे आने वाले शोधकर्ताओं के लिए एक नया मार्ग प्रस्तुत कर सके इसलिए शोध-प्रबंध को शोध-कार्य हेतु निर्धारित निम्न पद्धतियों की सहायता से लिखा गया है-

वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति:-

ग्रामीण जीवन से संपृक्त अवधारणाओं की प्रक्रियाएं गतिशील हैं, जिनका वर्णन करके समाज को एक नई दिशा प्रदान की सकती है। ग्राम्य जीवन-क्षेत्र से जुड़ी प्रवृत्तियों को खोजा जा सके, उनमें सुधार कर उसे एक नवीन रूप दिया जा सके इसलिए इस शोध-प्रबंध वर्णनात्मक अनुसन्धान पद्धति मुख्यतयाःकिया गया है।

विवरणात्मक अनुसंधान पद्धति:-

विवरणात्मक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग रचना में किसी परिघटना से सम्बंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इस शोध पद्धति का सम्बन्ध सम्पूर्ण सृष्टि में विद्यमान स्थितियों अथवा संबंधों, मौजूदा चलनों, वर्तमान

मान्यताओं, दृष्टिकोणों अथवा वर्तमान में चलती प्रक्रियाओं और उन पर पड़ने वाले प्रभावों से होता है। विवरणात्मक अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य किसी परिस्थिति में प्रवृत्तियों अथवा स्थितियों के सन्दर्भ में क्या पाया जाता है? इसका वर्णन करता है। इस शोध-पद्धति का प्रयोग शोध प्रबंध में सामान्यतः सभी अध्यायों में किया गया है।

विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति:-

इस पद्धति का प्रयोग निष्कर्ष निकालने और निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए जानकारी प्राप्त करने के लिए विश्लेषण करने और व्याख्या करने की प्रक्रिया तक है। शोध के उद्देश्यों एवं अपने पास मौजूद तथ्यों के आधार पर हम विभिन्न तरीकों का प्रयोग करके विश्लेषणात्मक शोध कर सकते है। इस शोध पद्धति का प्रयोग मेरे द्वारा सामान्यतः सभी अध्यायों में किया गया है।

तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति:-

ज्ञान एवं अनुभव के क्षेत्र में सर्वमान्य मान्यताओं को उद्घाटित कर एकता का सामंजस्य पूर्ण उदाहरण तुलनात्मक शोध द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। यह एक ऐसा शोध का तरीका है जिसमें विभिन्न सामाजिक इकाइयों जैसे- देश, संस्कृतियाँ, समूह या घटनाओं के बीच समानताएँ और अंतर ढूँढकर उनके कारणों, प्रक्रियाओं और परिणामों को गहराई से समझा जाता है। यह पद्धति सामाजिक विज्ञानों समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र और साहित्य में बहुत उपयोगी है, जहाँ यह हमें व्यवस्थित तुलना के जरिए जटिल सामाजिक घटनाओं के स्वरूप को पहचानने, सिद्धांत बनाने और सार्वभौमिक समझ विकसित करने में मदद करती है। संक्षेप में, तुलनात्मक पद्धति हमें केवल वर्णन करने के बजाय यह समझने में मदद करता है कि कुछ चीजें एक तरह से क्यों होती हैं और दूसरी तरह से क्यों नहीं, जिससे सामाजिक वास्तविकता की व्यापक समझ बनती है। इस शोध-पद्धति का प्रयोग मेरे द्वारा मुख्यतः तीसरे और चौथे अध्याय में किया गया है।

विषय-प्रवेश:-

आजादी के पश्चात भारतीय गाँवों की बदलती हकीकत को शिवमूर्ति का साहित्य सफलता के साथ अभिव्यक्त करने में सक्षम है। आजादी के बाद के भारतीय समाज में कई तरह के बदलाव आए। इन बदलावों से आज आम आदमी का जीवन प्रभावित हुआ है। लोकतंत्र ने गरीबों एवं मजदूर-किसानों के जीवन में कुछ सहूलियतें अवश्य प्रदान की हैं। इसका लाभ समाज के उस वर्ग ने भी उठाया जो चालाक था और आम लोगों की मजबूरियों को अपने लाभ के

रूप में देखता था। शिवमूर्ति ने अपनी कहानियों में समाज के वर्गीय संबंधों के इस बदलते स्वरूप को बड़ी सूक्ष्मता के साथ उद्घाटित किया है। इनके साहित्य में बदलते हुए गांव का यथार्थ रूप दिखता है। ग्रामीण-जीवन का संरचनागत स्वरूप एवं प्रकार्यात्मक स्वरूप पूरी व्यापकता के साथ यहां प्रस्तुत किया गया है। भारतीय समाज वर्गों एवं वर्णों की बुनियाद पर टिका है। इन दोनों सामाजिक वर्गीकरण को ध्यान में रखे बिना हम भारतीय समाज के ग्रामीण जीवन को ठीक से नहीं समझ सकते। शिवमूर्ति के उपन्यास एवं कहानियों में ग्रामीण-जीवन के प्रत्येक तत्वों को देखा जा सकता है। भारत का लोक मुख्यतः गांव में ही बसता है। उस लोक के जीवन में व्याप्त संस्कृति, भाषा एवं मान्यताओं को शिवमूर्ति जी का साहित्य पूर्ण रूप से चरितार्थ करता है।

प्रेमचंद पूर्व ग्रामीण जीवन का अवलोकन:- प्रेमचंद पूर्व के हिंदी कथा-साहित्य में ग्रामीण-जीवन को प्रतिनिधित्व दिया गया है। आजादी से पूर्व का भारतीय समाज अंग्रेजों के साम्राज्य का अंग था। गांव और शहर के जीवन में फासला होने के बावजूद गांव पर उचित ध्यान नहीं दिया जाता था। प्रेमचंद-पूर्व के हिंदी कथा-साहित्य में गांव एवं शहर की कोई अलग तस्वीर उपस्थित नहीं की जाती थी। दोनों तरह के जीवन में आवाजाही दिखाई देती है। गांव का जीवन तब के साहित्य में विशेषीकृत रूप में अपना महत्व नहीं पा सका था। 'दुलाईवाली', 'इंदुमती', 'टोकरी भर मिट्टी', 'प्लेग की चुड़ैल', 'ग्यारह वर्ष का समय' आदि कहानियों में गांव, कस्बे एवं नगर के जीवन को अलग से रेखांकित नहीं किया गया है। 'ग्यारह वर्ष का समय' कहानी जो कि मौलिक रूप में लिखी गई है जिसमें ग्रामीण परिवेश का बदला हुआ स्वरूप नजर आता है जिसे देख इस कहानी के लेखक भी चिंतित हैं- 'हा! यही स्थान किसी समय नर-नारियों के आमोद-प्रमोद से पूर्ण रहा होगा और बालकों के कल्लोल की ध्वनि चारों ओर से आती रही होगी। वही आज कराल काल के कठोर दांतों के तले पिसकर चकनाचूर हो गया है। तृणों से आच्छादित गिरी हुई दीवारें मिट्टी और ईंटों के ढूह, टूटे-फूटे चौकठे और किवाड़ इधर-उधर पड़े एक स्वर से मानो पुकार के कह रहे थे- दिनन को फेर होत, मेरु होत माटी को; प्रत्येक पार्श्व से मानो यही ध्वनि आ रही थी। मेरे हृदय में करुणा का एक समुद्र उमड़ा जिसमें मेरे विचार सब मग्न होने लगे।' इसी प्रकार प्रेमचंद पूर्व के हिंदी उपन्यासों में भी गांव का विशेष रूप सामने नहीं आ पाया था। हिंदी कथा-साहित्य में प्रेमचंद के आगमन से उसकी परिधि में फैलाव आया। प्रेमचंद ने अपनी लेखनी में गांव के जीवन को ही केंद्र में रखा।

प्रेमचंद युगीन ग्रामीण जीवन का अवलोकन:-

प्रेमचंद-युग के हिंदी साहित्य में ग्रामीण-जीवन का महत्व नि:संदेह रूप से बढ़ा। आजादी की लड़ाई में शामिल

भारतीय युग-पुरुषों ने ग्रामीण जीवन को केंद्र में लाना शुरू किया था। 1915 ई. में जब महात्मा गांधी ने भारतीय राजनीति में पदार्पण किया तो उन्होंने देश के हर क्षेत्र के गांवों का दौरा किया था। चंपारण गांव में जाकर गांधी जी ने आजादी की लड़ाई में गांव वालों को भी जोड़ने की मुहिम चलाई। गांव की समस्या को उन्होंने मुख्य धारा के राजनीतिक आंदोलन से जोड़ा। पुरुष-महिला, दलित, पिछड़े, मजदूर-किसानों आदि में गांधी जी ने विश्वास जगाया कि यह देश तुम्हारा भी है। इस तरह के बनते गए परिवेश को नए रचनाकारों ने अपने साहित्य के केंद्र में महत्व देना आरंभ किया। प्रेमचंद ,जयशंकर प्रसाद, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह आदि लेखकों ने इसी नए परिवेश से अपनी मानसिक-निर्मिति के लिए आधार प्राप्त किया था। प्रेमचंद का पूरा साहित्य ग्रामीण-जीवन की वस्तु स्थितियों को सामने रखता है। उनके साहित्य का कोई भी हिस्सा ऐसा नहीं है जो कि ग्रामीण जीवन का किसी-न-किसी रूप में स्पर्श न करता हो। प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि उपन्यासों के केंद्र में गांव है। गांव का जीवन कृषि-केन्द्रित था। इसलिए कृषि से जुड़ी समस्याएं इन उपन्यासों में मुखर होती हैं। प्रेमचंद की अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण-जीवन को लेकर चलती हैं। उनकी महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध कहानियाँ गांव के जीवन पर आधारित हैं। गांव की गरीबी, वर्ण-व्यवस्था में पिसते दलित एवं पिछड़े, पुरुष-वर्चस्व के अधीन गुलामी को खींचती महिलाएं, सामन्तों-जमीदारों के शोषण के शिकार किसान एवं मजदूर यह सब प्रेमचंद के साहित्य की बुनियाद में है। प्रेमचंद के समय में न केवल भारतीय समाज में बल्कि दुनिया में ऐसी-ऐसी गतिविधियां चल रही थीं, जिनसे मानव-जीवन में एवं उसकी सामाजिक-व्यवस्था में बुनियादी बदलाव आ रहे थे। दुनिया में वामपंथ एवं मार्क्सवाद के प्रभाव से सामाजिक संरचनाओं में बदलाव की बुनियाद पड़ रही थी। भारतीय सामंती-समाज की आधारभूत-संरचना में इन बदलावों ने उस समय तक अपना हस्ताक्षर कर दिया था। प्रेमचंद की कहानियों एवं उपन्यासों में इस तरह के बदलावों को देखा जा सकता है। रंगभूमि, प्रेमाश्रम, कायाकल्प, गोदान आदि उपन्यासों में किसानों एवं आम-जन की तरफ से उठने वाले विरोध की हवाओं के पीछे के कारण इन्हीं वैश्विक-वैचारिकी एवं राजनीतिक आंदोलनों में देखा जा सकता है।

प्रेमचंदोत्तर युगीन ग्रामीण जीवन का अवलोकन:-

आजादी के बाद देश की सामाजिक-स्थितियों में अनेक तरह से बदलाव आए। रसप्रिया कहानी एक प्रेमकथा है, जिसमें राग-द्वेष का भाव देखने को मिलाता है। रेणु आंचलिक रंग के एक ऐसे चित्रकार हैं जो अपनी लेखनी के माध्यम से लोक जीवन को संजोने का कार्य अपने कहानियों और उपन्यासों में करने के लिए जाने जाते हैं। रसप्रिया

कहानी में लोकगीत और विद्यापति की परम्परा के महत्व को उभारा गया है। पन्द्रह-बीस साल पहले तक विद्यापति नाम की थोड़ी पूछ हो जाती थी, शादी-ब्याह, यज्ञ-उपनैन, मुण्डन-छेदन आदि शुभ कार्यों में विद्यापतिया मण्डली की बुलाहट होती थी। रसप्रिया कहानी का यह उद्धरण दृष्टव्य है- 'पंचकौड़ी मिरदंगिया की मण्डली ने सहरसा और पूर्णिया ज़िले में काफ़ी यश कमाया है। पंचकौड़ी मिरदंगिया को कौन नहीं जानता! सभी जानते हैं, वह अधपगला है!.. गांव के बड़े-बूढ़े कहते हैं, अरे, पंचकौड़ी मिरदंगिया का भी एक ज़माना था!' लोकतांत्रिक-व्यवस्था ने आम-जीवन में आमूल-चूल बदलाव लाने के लिए कई तरह के अवसर तैयार किये। पंचायती राज-व्यवस्था एवं भूमि के वितरण से गांव के जीवन में बदलाव आना शुरू हुआ। पंचवर्षीय-योजनाओं में गांव के विकास को भी महत्व दिया गया। परंपरागत ग्रामीण-जीवन में इन योजनाओं से बदलाव आए। शहरों एवं कस्बों का विस्तार तेजी से हुआ। रोजगार के सभी तरह के साधन नगरों एवं कस्बों में उपलब्ध होने के कारण गांव के लोगों ने शहरों एवं कस्बों की तरफ भागना शुरू किया। इससे ग्रामीण-जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। प्रेमचंद के समय के समाज की गांव-केंद्रीयता आजादी के बाद कमजोर होने लगी और यह निरंतर कमजोर होती चली जा रही है। आजादी के बाद की हिंदी कहानी में जितनी भी धाराएं चली हैं, उन सब में ग्रामीण-जीवन के बदलते यथार्थ को हम आसानी से देख सकते हैं। नई कहानी के दौरान ढेर-सारे कथाकार ग्रामीण-संवेदना को हिंदी कहानी में प्रस्तुत किये। मार्कंडेय, फणीश्वरनाथ 'रेणु', शेखर जोशी, शिवप्रसाद सिंह आदि की कहानियों में उस समय का ग्रामीण-जीवन मुखर होकर बोलता है।

हालांकि 'नई कहानी' के कथाकार कस्बाई एवं नगरीय-बोध को सहजता के साथ स्वीकार कर रहे थे लेकिन फिर भी गांव से जुड़े कथाकारों में ग्रामीण-बोध की गुंजाइश बरकरार थी। आलोचकों ने ग्रामीण कहानी एवं नगरीय कहानी की दो धाराओं का भी वर्गीकरण कर लिया था। 'अकहानी' के समय में रवीन्द्र कालिया, जगदीश चतुर्वेदी आदि कथाकारों ने भले ही नगरीय-जीवन को आधार बनाकर कहानियाँ लिखी हैं लेकिन काशीनाथ सिंह, दूधनाथ सिंह, मधुकर सिंह जैसे कथाकारों ने गांव के जीवन को अपनी कहानियों में महत्व दिया है। देश के विकास में हो रही प्रगति के साथ-साथ हिंदी कथा साहित्य में ग्रामीण-जीवन की उपस्थिति दिनों दिन विरल होती जा रही थी। बीसवीं शताब्दी के सत्तर-अस्सी के दशकों में उल्लेखनीय कथाकार नहीं उभरे, जिन्होंने ग्रामीण जीवन को केंद्र में रखकर कहानियाँ लिखी हों। रामदरश मिश्र, विवेकी राय, मिथिलेश्वर जैसे शुद्ध ग्रामीण-भावबोध में पले-बढे कथाकारों की कहानियों तक ही ग्रामीण-जीवन सीमित होकर रह गया। अस्सी के दशक के बाद की हिंदी कहानी में ग्रामीण-जीवन को लेकर कुछ हलचलें बढी हैं। संजीव, जयनंदन, पंकज बिष्ट, देवेंद्र आदि ने गांव को अपनी कहानियों में उपस्थित किया है।

शिवमूर्ति ने अपनी कहानियों का लेखन इसी समय आरंभ किया था। इनकी कहानियों में उस समय के बदलते हुए गांव के जीवन को देखा जा सकता है। इनकी कहानियों में केवल गांव का जीवन ही नहीं है बल्कि भावना एवं संवेदना भी है। गांव की बोली-बानी, भाषा-मुहावरे, गीत-संगीत भी है।

1990 ई. के बाद के वैश्वीकरण ने भारतीय गांव के जीवन को फिर एक बार तेजी से बदला है। अखिलेश, जयनंदन, उदय प्रकाश आदि की कहानियों में इस बदलाव को अभिव्यक्ति मिली है। मैत्रेयी पुष्पा, ऋता शुक्ला जैसी महिला कथाकारों ने भी गांव के जीवन को अपनी कहानियों में दिखाया है। महेश कटारे, चंद्रकिशोर जायसवाल की कहानियों में उनके अंचल विशेष के गांव के यथार्थ को देखा जा सकता है। पिछली शताब्दी के अंतिम दशक के हिंदी कहानी-लेखन में कई तरह के बदलाव देखे जा सकते हैं। अब जीवन में ही गांव व शहर का फासला उस रूप में नहीं रहा, जैसा कि पहले रहा करता था। लोग कस्बों में रहकर नौकरी-रोजगार करते हैं और गांव में भी रहते हैं। गांव से शहर-नगर में उनकी आवाजाही है। पंकज मित्र, ऋषिकेश सुलभ, योगेंद्र आहूजा जैसे कथाकारों की कहानियों में इसी तरह के ग्रामीण-जीवन का यथार्थ है।

इक्कीसवीं शताब्दी के इन दो दशकों में अनेक युवा-लेखक हिंदी कहानी एवं उपन्यास लेखन के क्षेत्र में सामने आए हैं। इन लेखकों में अधिकांशत: कथाकारों का संबंध गांव के जीवन से है। इस शताब्दी के नए संक्रमण से गुजरते हुए गांव को हम इन कथाकारों की कहानियां एवं उपन्यासों में देख सकते हैं। उमाशंकर चौधरी, मनोज रूपड़ा, मनीषा कुलश्रेष्ठ, पंकज सुधीर, रणेंद्र, कैलाश वनवासी, नीलाक्षी सिंह, मनोज कुमार पांडेय, राजू शर्मा, विमलचंद्र पांडेय, चंदन पांडेय, राकेश मिश्रा, सोनी पांडेय, योगिता यादव, प्रत्यक्षा, उपासना, गीताश्री, प्रज्ञा रावत, सत्यनारायण पटेल, मुरारी शर्मा, एस.आर.हरनोट, अरुण ए.असफल, रणीराम गढ़वाली आदि इस शताब्दी के नए कथाकार हैं। नई शताब्दी के बदलते जीवन-यथार्थ को इन कथाकारों ने अपनी कहानी और उपन्यासों में पूरी तन्मयता के साथ उपस्थित किया है। मनोज कुमार पांडेय की कहानियों में अवध क्षेत्र के गांव का जीवन दिखाई देता है तो पंकज मित्र की कहानियों में झारखंड के आदिवासियों के गांव का। नीलाक्षी सिंह की कहानियों में बिहार के गाँव हैं तो चन्दन पाण्डेय**,** विमलचंद पाण्डेय की कहानियों में भोजपुरी क्षेत्र के गाँव हैं ।

एस.आर.हरनोट ने पहाड़ के विशेष रूप से हिमाचल के गांवों की कहानियां लिखीं हैं। पहाड़ी गांवों की बदलती तस्वीर हरनोट की कहानियों को जीवंत बना देती हैं। इनकी कहानी 'नदी गायब है' में पारिथितिकी तंत्र से होते छेड़छाड़ की बीभत्स स्थिति स्पष्ट दिखाई पड़ती है। 'नदी गायब है' पर्यावरणीय विचार और चेतना की कहानियों

का सार-संग्रह है जिसका संपादन डॉ. उषारानी राव के द्वारा किया गया है। पर्यावरण आज का सबसे बड़ा मुद्दा और चिंता भी है। हमने नदियों और पहाड़ों को किस तरह से भयावह क्षति पहुंचाई है, ये कहानियां उनकी गहरी पड़ताल करती हैं। पर्यावरण भी हमारे अन्तस् को कहाँ तक स्वच्छ रखे? उसका प्रदूषित होना बाहर के प्रदूषित होते पर्यावरण से कहीं खतरनाक है। ये कहानियां पाठक को अवश्य ही चिंतन-मनन हेतु बाध्य करने में समर्थ हैं और उसे अपने आस-पास की चीजों, पशु पक्षियों और नदी पहाड़ों से और ज्यादा प्यार करने में प्रेरित कर सकने में भी सक्षम हैं। **मुरारी शर्मा** ने भी पहाड़ के गांवों का चित्रण किया है। **सत्यनारायण पटेल** की कहानियों में मालवा-अंचल का ग्रामीण-जीवन बोलता है।

हिंदी कथा-साहित्य के इस सवा सौ साल की यात्रा में कई तरह के पड़ाव आये हैं। शिवमूर्ति जैसे संवेदनशील कथाकार ने इन दोनों शताब्दियों के जनमानस के जीवन को अनुभूत किया है और उसे अपने कथा-साहित्य में रचा भी है। अस्सी के दशक से आरंभ हुई इनकी कथा-यात्रा आज इक्कीसवीं शताब्दी के दो दशक बीत जाने तक अनवरत जारी है। परिमाण में ज्यादा न लिखने के बावजूद शिवमूर्ति जी ने गुणवत्ता में बहुत महत्वपूर्ण लिखा है। देश के जनजीवन में आए बदलाव के कितने पड़ावों को इन्होंने खुद भी जी कर देखा है और उसे महसूस किया है। इनका बचपन आजादी की नयी एवं ताजी हवा के बीच बीता। आपातकाल के समय को इन्होंने अपनी किशोरावस्था में देखा। हिंदुस्तान के गांव में जड़ जमाए जातिवाद के दंश को शिवमूर्ति जी ने अपने बचपन से ही देखा और भोगा था। इनके इस भोगे हुए यथार्थ के भी कई चरण हैं। इनका पूरा जीवन गांव में ही बीता। गांव के सवर्णवाद से इनका परिवार एवं इनके वर्ग के लोग आतंकित रहा करते थे। वर्ण-दंश एवं गरीबी को इन्होंने भोगा था। इनके परिवार के एक-एक सदस्य जातीय उत्पीड़न के भुक्त-भोगी थे। इसलिए ये जब अपनी कहानियां रचते हैं तो उसमें यह पूरा भोगा हुआ यथार्थ समाहित हो जाता है। गरीबी और बेरोजगारी को इन्होंने स्वयं भोगा था। इसके भी कई रूप इनके जीवन में थे और इनकी कहानियों में भी ये उपस्थित हैं। शिवमूर्ति जी की कहानियों में ग्रामीण-परिवेश जीवंत हो उठा है। गांव की पारिवारिक-संरचना, गांव के लोगों के सामाजिक संबंध, नातेदारी, सामाजिक परिस्थितियां इनकी कहानियों में सशक्त तरीके से उभर कर सामने आती हैं। गांव के जीवन में आर्थिक-स्रोत के परंपरागत साधनों के साथ-साथ नए-नए साधन भी जुड़ते आए हैं। खेती-किसानी, नौकरी, दुकान चलाना, मजदूरी करना आदि आर्थिक-स्रोत इनकी कहानियों में उपस्थित हैं।

शिवमूर्ति जी की कहानियाँ कई मायनों में अपने समकालीन कथाकारों से भिन्न हैं। प्रसिद्ध कथाकार संजीव जी भी शिवमूर्ति के अंचल के हैं। उनकी कहानियों में भी ग्रामीण-बोध है। अवध क्षेत्र का ग्रामीण-जीवन संजीव की कहानियों

के केंद्र में है लेकिन उनकी कहानियों की गुणात्मकता कुछ और है। शिवमूर्ति की कहानियाँ संजीव जी से भिन्न हैं। शिवमूर्ति की कहानियाँ अपने समय के गांव के अर्थ-संबंधों को भी खोलती चलती हैं। स्त्री- पुरुष के बीच के रागात्मक संबंधों पर काम कर रहे पुरुष-वर्चस्व के तत्वों को शिवमूर्ति की कथा-दृष्टि खोलती चलती है। **'तिरिया-चरित्तर'** इनकी ऐसी ही कहानी है। **'कुच्ची का कानून'** कहानी भी स्त्री-संवेदना और स्त्री-चेतना की कहानी है।

विकास की निरंतरता भारतीय गांव भी बदल रहा है। गांव की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्थितियों में लगातार बदलाव आ रहे हैं। शिवमूर्ति के कथा-साहित्य इन बदलावों को रेखांकित करते चलते हैं। **'कसाईबाड़ा'** कहानी में गांव के सत्ता-तंत्र की अमानुषता को दिखाया गया है। **'अकाल-दंड'** भी गांव के ही परंपरागत वर्चस्वशाली ताकतों की, उनकी हैवानियत और आम-जन के शोषण एवं प्रतिरोध की कहानी है। **'भरतनाट्यम'** ग्रामीण-बेरोजगारी की कहानी है। एक सामान्य निम्न-वित्त वाले परिवार में बेरोजगारी की क्या हालत बनती है? उसे इस कहानी में दिखाया गया है। इसके साथ ही यह कहानी भारतीय ग्रामीण समाज में स्त्रियों की दशा को लेकर भी सवाल खड़े करती है। **'सिरीउपमाजोग'** कहानी एक पढ़े-लिखे दलित युवक की भावनाओं के बदलाव को उपस्थित करती है। **'केशर-कस्तूरी'** कहानी में एक होनहार युवती के जीवन को आर्थिक झंझावातों में पिसते हुए देखा जा सकता है तो **'तिरिया चरित्तर'** कहानी में एक युवती के जीवन को ग्रामीण-नैतिकता एवं पंचायती-फरमानों से बर्बाद होते देखा जा सकता है।

शिवमूर्ति द्वारा लिखे गए और अब तक प्रकाशित हो चुके कुल तीन उपन्यास हैं। इन तीनों उपन्यासों का संबंध ग्रामीण-जीवन से है। इनका पहला उपन्यास **'त्रिशूल'** है। इस उपन्यास का संबंध अयोध्या मंदिर-मस्जिद विवाद के सामाजिक संदर्भों से है। बाबरी-मस्जिद के ध्वंस के पश्चात भारतीय समाज में जिस प्रकार की सांप्रदायिक नफरत अपना विकराल रूप बना लेती है, उसे यह उपन्यास अत्यंत सूक्ष्मता के साथ दिखाता है। भारतीय गांवों एवं कस्बों के लोगों की सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना पर सांप्रदायिकता किस तरह से अपना गहरा असर छोड़ती है, इसे यह उपन्यास उपस्थित करता है।

शिवमूर्ति के दूसरे उपन्यास **'तर्पण'** का संबंध उत्तर-भारत में उभरती नई राजनीतिक चेतना से है। भारतीय समाज के लिए जाति हमेशा से महत्वपूर्ण विषय रहा है। 'तर्पण' उपन्यास में लेखक ने दलित समुदाय के बीच विकसित हो रहे राजनीतिक-चेतना को दिखाया गया है। सत्ता का असर समाज में बहुत गहराई तक पड़ता है। उत्तरी-भारत का सवर्ण-वर्चस्व वाला समाज यहां के राजनीतिक बदलाव को इतनी आसानी से नहीं स्वीकार कर पाता। दलित-पिछड़ों के

राजनीतिक हस्तक्षेप को यह समाज अपने लिए त्रासदी मानता है लेकिन यह हस्तक्षेप दिनों-दिन समाज में बढ़ता ही जा रहा है और समाज को बहुत हद तक सकारात्मकता के साथ बदल भी रहा है। उपन्यास भारतीय समाज में इन सभी प्रक्रियाओं को चित्रित करता है।

इसी प्रकार शिवमूर्ति का नया उपन्यास **'अगम बहे दरियाव'** भी भारतीय ग्रामीण जीवन में आ रहे बदलाव एवं सामाजिक अंत:प्रक्रियाओं को दर्शाता है। आपातकाल से लेकर शताब्दी के अवसान तक के समय-विस्तार को समेटे हुए यह उपन्यास उत्तर भारत के ग्रामीण-जीवन को बहुत गहराई के साथ उद्घाटित करता है। इस उपन्यास के केंद्र में किसान-जीवन है। किसान ग्रामीण-जीवन की धुरी होता है। पहलवान नामक व्यक्ति के जीवन के माध्यम से लेखक ने भारतीय समाज में भूमंडलीकरण, मंडलीकारण एवं कमंडलीकरण की पूरी प्रक्रिया को दिखाया है। बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में इन तीनों घटकों ने भारतीय समाज को गहराई से प्रभावित किया है। 'भूमंडलीकरण' ने बाजार के माध्यम से देश की पूरी अर्थव्यवस्था को बदल दिया है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, निवेश तथा सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से विश्व के विभिन्न देशों के बीच सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक अंतर्क्रिया एवं एकीकरण की प्रक्रिया को भूमंडलीकरण कहते हैं। 'मंडलीकरण' ने भारतीय राजनीति में पिछड़ों एवं वंचितों के लिए समुचित अवसर तैयार किया है। 'कमंडलीकरण' से तात्पर्य उस धार्मिक एवं सांप्रदायिक चेतना से है, जिसे सत्ता की राजनीति के लिए अपना साधन बनाकर आमजन के बीच उपस्थित किया गया है। यह उपन्यास इन तीनों के प्रभाव को दिखाता है। इस प्रकार शिवमूर्ति का समग्र साहित्य उत्तर भारत के ग्रामीण-जीवन को अत्यंत विस्तार एवं बारीकी से पाठकों के समक्ष उपस्थित करता है।

शोध उद्देश्य:-

प्रस्तुत शोध-कार्य में कथाकार शिवमूर्ति का व्यक्तित्त्व और उनका रचनात्मक-कार्य विशेष रूप से आकर्षण के केंद्र में है। शिवमूर्ति की कहानियों की सहजता और शिल्पगत सरलता पाठक को बांधे रखने में सक्षम है। इनकी कहानियों की इस प्रवृत्ति ने मेरी साहित्यिक अभिरुचि को पोषित किया है। शोध-कार्य करने का अवसर पाने पर शोध-विषय के चयन में बिना किसी तरह की परेशानी महसूस किये मैंने शिवमूर्ति के कथा-लेखन को स्वीकार कर लिया। मेरे शोध-निर्देशक ने विषय निर्धारण में मेरी रूचि को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत विषय को अनुमोदित कर दिया। मेरे प्रस्तुत शोध का शीर्षक **'शिवमूर्ति के कथा-साहित्य में ग्रामीण-जीवन का चित्रण : एक अध्ययन'** है। प्रस्तुत शोध-कार्य निश्चित रूप से अपने समय और समाज के ग्रामीण-जीवन को शिवमूर्ति के कथा साहित्य के माध्यम से तलाशने

में पूर्ण समर्थ है। यह शीर्षक पूरी तरह से प्रासंगिक है। इस शोध-विषय में शिवमूर्ति जी द्वारा रचित पूरा कथा-साहित्य सन्निहित है। इनके कथा-साहित्य में अभिव्यक्त रचनाकार के यथार्थ-बोध पर शोध करना अपने आप में मौलिक और सर्वथा नया कार्य है। इस शोध-कार्य के चयन के केंद्र में मुख्य शोध-समस्याएं यह थीं- शिवमूर्ति के कथा-साहित्य में व्यक्त ग्रामीण-जीवन, उसमे रचा बसा मानवीय मूल्य और संवेदनाएं। शिवमूर्ति ने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में ग्रामीण-समाज का यथार्थ चित्रण किया है। इनके कथा-साहित्य में ग्रामीण-समाज का यथार्थ कितना और किस रूप में उपस्थित हुआ है? इसे खोजने का उद्देश्य ही इस कार्य के मूल में है।

शिवमूर्ति की कहानियों पर अब तक अनेक शोध-कार्य हो चुके हैं। इतिहास और समाजशास्त्र में उस काल से जुड़े ऐतिहासिक और सामाजिक बिन्दुओं पर भी अलग-अलग शोध-कार्य हो चुके हैं लेकिन 'शिवमूर्ति के समग्र कथा-साहित्य में अभिव्यक्त ग्रामीण-जीवन' विषय पर हिन्दी में अब तक कोई शोध-कार्य नहीं हुआ था। इसलिए यह शोध-कार्य एक नवीन एवं पूर्ण रूप से मौलिक विषय पर आधारित है। इस शोध-कार्य की पारिकल्पना शिवमूर्ति के कथा-साहित्य पर तैयार की गई और उसे पूरा किया गया। इस कार्य के अंतर्गत जितने भी शीर्षक और उपशीर्षक की परिकल्पना की गई है, वे सभी शिवमूर्ति के कथा-साहित्य से सम्बंधित हैं। इस शोध-परिकल्पना के पीछे शिवमूर्ति के उपन्यासों एवं कहानियों में ग्रामीण, राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक यथार्थ को खोजने की इच्छा बलवती रही। ग्रामीण-जीवन के यथार्थ के इन्हीं विभिन्न तत्त्वों को आधार बनाकर इस शोध-कार्य को पूरा किया गया है।

किसी शोध-कार्य की योजना बनाते समय ही उसके शोध-उद्देश्य को स्पष्ट कर लिया जाता है। मैंने इस शोध-कार्य को आरम्भ करने से पूर्व ही शोध-उद्देश्य को स्पष्ट कर लिया था। शिवमूर्ति के कथा-साहित्य में अभिव्यक्त ग्रामीण-जीवन को खोजना ही इस शोध-कार्य का प्रमुख उद्देश्य था। विशिष्ट उद्देश्य के रूप में हमें शिवमूर्ति के जीवन, व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व को समझना था कि कैसे लेखक एक विशेष मानसिक-प्रक्रिया से गुजरते हुए किसी रचना को आकार देता है। शिवमूर्ति अपने युग की विशेष उपज हैं। तत्कालीन देश-काल एवं वातावरण का पूरा प्रभाव इनकी रचना-प्रक्रिया पर पड़ा है। इसलिए इनसे संपृक्त देश-काल एवं वातावरण को समझना भी इस शोध-कार्य का एक प्रमुख उद्देश्य है। हिन्दी साहित्य में विशेष रूप से कहानी-उपन्यास साहित्य में अभिव्यक्त ग्रामीण-यथार्थबोध का ऐतिहासिक अनुशीलन करना भी इस शोध कार्य का एक विशिष्ट उद्देश्य रहा है। शिवमूर्ति के कथा-साहित्य में अपने समय के यथार्थ के सभी तत्वों को खोजना इस शोध-कार्य का बड़ा उद्देश्य है। ग्रामीण-यथार्थ के इन तात्विक बिंदुओं को अनेक रूपों में अभिव्यक्त किया गया है। ये बिंदु इन शीर्षकों के रूप में निश्चित किये गए हैं- पारिवारिक स्थिति,

सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिति, आर्थिक स्थिति आदि। इन सभी शीर्षकों को विशिष्ट उद्देश्य के रूप में लिया गया है और उन पर मौलिक रूप से कार्य संपन्न किया गया है। इस दृष्टि से शिवमूर्ति के कथा-साहित्य की भाषा और शिल्प को भी उसके वास्तविक रूप में परखना भी इस शोध-कार्य का उद्देश्य है। इस शोध-कार्य के माध्यम से अपने अभीष्ट शोध-उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। इस शोध-कार्य में शिवमूर्ति के उपन्यासों और कहानियों का समग्र रूप से अनुशीलन एवं विवेचन किया गया है।

प्रस्तुत शोध-कार्य पूरे सामर्थ्य के साथ अपने युग के यथार्थ को उद्घाटित करता है। यह शोध-कार्य शिवमूर्ति के उपन्यासों एवं कहानियों का बहुस्तरीय विश्लेषण करता है। इस शोध- कार्य में शिवमूर्ति के उपन्यासों एवं कहानियों को आधार बनाया गया है।

प्रस्तुत शोध-कार्य हिन्दी साहित्य की कथा-साहित्य विधा पर केन्द्रित है। लेकिन इसपर केन्द्रित होने के बावजूद इस कार्य का फैलाव विस्तृत है क्योंकि इस शोध कार्य में ग्रामीणांचल आता है जहां अनेकानेक विसंगतियां भी बड़े मात्रा में दिखाई पड़ती हैं। पहाड़ी गांवों में जहां प्रकृति का सुरम्य रूप मन को आह्लादित कर देता है तो वहीं पिघलते ग्लेशियर मनुष्य को यह सोचने पर मजबूर कर देते हैं कि हम विकास की अंधी दौड़ में किस कदर विनाश की ओर अग्रसित हो रहे हैं। संस्कृतियों को संजोए अवध के गांव हों या फिर विरासत को लिए मालवा के गांव हर परिवेश में बदलाव और बदले दोनों का ही विभत्स स्वरूप दिखाई पड़ता है। अस्तित्व की लड़ाई में गांव का मन अब गांव जैसा नहीं दिखाई पड़ता। इस कार्य का अंतरानुशासनात्मक महत्त्व है। यह शोध-कार्य सहित्य के साथ-साथ अन्य कई अनुशासनों के लिए महत्त्वपूर्ण है। आज़ादी के समय से लेकर इक्कीसवीं शताब्दी के इन दो दशकों तक का इतिहास इस कार्य के अंतर्गत समाहित है। किसी समय का यथार्थ जीवन के विविध क्षेत्रों से मिलकर बनता है। इस काल की सामाजिक संरचना, उसके स्वरूप और कार्यों को समझने का पूरा प्रयास इस कार्य में झलकता है। इस समय के दरम्यान देश की आर्थिक एवं राजनैतिक स्थितियों के यथार्थ को भी रेखांकित किया गया है। इसलिए इस शोध-कार्य का संबंध एक साथ साहित्य, इतिहास, राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र से जुड़ता है। शिवमूर्ति के उपन्यासों एवं कहानियों में आये पात्रों के मनोविज्ञान द्वारा व्यक्ति के मनोविज्ञान को समझा जा सकता है। इस प्रकार यह शोध-कार्य मात्र साहित्य तक सीमित नहीं है। आज के समय में इन विभिन्न अनुशासनों के लिए यह कार्य नई दृष्टि से कुछ नए तथ्य सामने लाता है।

इस शोध-कार्य को पूरा करने में शोध की मौलिक प्रविधियों का उपयोग किया गया है। आगमनात्मक एवं निगमनात्मक प्रणाली द्वारा विभिन्न विवेचनाओं को पूरा किया गया है। हिन्दी कथा-साहित्य में अभिव्यक्त ग्रामीण यथार्थ-बोध के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को समझने में ऐतिहासिक प्रणाली को अपनाया गया है। विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक विश्लेषणों में डाटा(आंकड़ा) प्रविधि का भी उपयोग किया गया है। इन विभिन्न शोध-प्रविधियों के प्रयोग का एक ही उद्देश्य है- शोध कार्य को प्रामाणिक एवं सारगर्भित बनाना। इन प्रणालियों से इस शोध-कार्य को निश्चित रूप से पूरा करने में भरपूर सहयोग मिला है।

इस शोध-कार्य के केंद्र-बिंदु शिवमूर्ति हैं। शिवमूर्ति की लिखी हुई कहानियाँ एवं उपन्यास विभिन्न प्रकाशनों द्वारा प्रकाशित हैं एवं सहजता से उपलब्ध हैं। लेकिन ग्रामीण जीवन को लेकर समाजशास्त्रीय विश्लेषण की सामग्री हिन्दी में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है। इसके लिए अंग्रेजी में लिखी पाठ्य-सामग्री पर निर्भर होना पड़ा है। इस दृष्टि से शिवमूर्ति का साहित्य सामान्यजन के बहुपयोगी है इसे दर्शाना ही इस शोध-कार्य का उद्देश्य है।

शोध प्रबंध का संक्षिप्त विवरण:-

प्रस्तुत शोध-कार्य को पांच अध्यायों में वर्गीकृत किया गया है। सभी अध्याय आपस में अंतर्संबंधित हैं। सभी अध्याय मुख्य शोध-विषय को स्पष्ट करने में सहयोग करते हैं। सभी अध्यायों के शीर्षकों को उप-शीर्षकों में वर्गीकृत कर मैंने अपने शोध-कार्य को अन्तिम स्वरूप दिया है।

प्रथम अध्याय:-

इसमें शिवमूर्ति जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तृत रूप से शोध-कार्य किया गया है। शिवमूर्ति जी का जीवन विविधताओं से भरा हुआ है। ये आज भी सक्रिय रूप से लेखन-कार्य से जुड़े हुए हैं। इनके जन्म से लेकर आज तक के जीवन का विवरण इस अध्याय में संकलित किया गया है। इनका बचपन गरीबी एवं संघर्ष में बीता। इनके माता-पिता का संघर्ष इनके जीवन की बुनियाद का मजबूत पक्ष है। इनका पारिवारिक परिवेश गांव का है। शिक्षा और व्यवसाय से ही इन्होंने अपना और अपने परिवार का जीवन सुधारा और उसे सुदृढ़ भी किया। इनके व्यक्तित्व में कई तरह के गुण हैं। इनके कृतित्व का दायरा अत्यंत विस्तृत न होते हुए भी विविधता से भरा हुआ है। जन्म, माता-पिता व पारिवारिक परिवेश, शिक्षा व व्यवसाय, विवाह, व्यक्तित्व, लेखन की प्रेरणा, कृतित्व आदि उपखंडों से इस अध्याय को गठित किया गया है।

निष्कर्ष:-

विषम परिस्थितियों में भी यदि कोई व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को ऊर्ध्वगामी बना कर रखता है तो वह उसकी बहुत बड़ी उपलब्धि है। शिवमूर्ति जी का व्यक्तित्व इस बात का द्योतक है कि पिता और मां से मिले संस्कारों ने उन्हें मजबूती प्रदान की जिसकी स्पष्ट छाप इनकी लेखनी में झलकती है।

द्वितीय अध्याय:-

इसमें विषयवस्तु के रूप में 'ग्रामीण जीवन की अवधारणा' को रखा है जिसके अंतर्गत भारतीय ग्रामीण जीवन के यथार्थ को चित्रित किया गया है। हिंदी कहानी एवं उपन्यास विधा के इतिहास में ग्रामीण-जीवन को किस रूप में अभिव्यक्त किया गया है, इसे यह अध्याय मुकम्मल तरीके से दिखाता है। इस अध्याय के अंतर्गत एक तरह से हिंदी आख्यान परंपरा का पूरा इतिहास भी प्रस्तुत किया गया है। हिन्दी कहानी एवं उपन्यासों के माध्यम से उभरे ग्रामीण जीवन की अवधारणा को इसमें दिखाया गया है। ग्रामीण जीवन के स्वरूप को उसके ऐतिहासिक सन्दर्भों में समझने के उद्देश्य से इस अध्याय को तीन उपखंडो में विभाजित किया गया है- (1). स्वतंत्रतापूर्व के ग्रामीण जीवन का चित्रण, (2). स्वातंत्र्योत्तर ग्रामीण-जीवन का चित्रण (3) .इक्कीसवीं सदी के ग्रामीण-जीवन का चित्रण। इन तीनों उपखंडों को तीन कालखंडों के रूप में देखा गया है। इन तीनों कालखंडों के कथात्मक-अभिव्यक्ति में भारतीय ग्राम-जीवन का जो स्वरूप उभर कर सामने आया है, उसे प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष:-

ग्राम्य जीवन की दुरूहता को समझ पाना सबके लिए आसान न होता यदि उसे साहित्य की परिधि में लाकर प्रेमचंद, रेणु आदि लेखकों ने उपजीव्य न बनाया होता। आज वर्तमान परिदृश्य में गांव मुखर हो उठा है। वह अपनी बदलती छवि को प्रदर्शित कर रहा है। विकास की पगडंडी पर खड़ा गांव नित नवीन आयाम को आत्मसात कर लीक से हटकर नए संस्कारों और संस्कृतियों को अपने में समेट रहा रहा है। ग्रामीण स्त्रियां भी अब मौन को छोड़कर अपने हक और अधिकार के लिए मुखरित हो रही हैं। अब गांव को नगर के संधि स्थल पर लाकर खड़ा कर दिया गया है। पंचायती व्यवस्था और भी ज्यादा सुदृढ़ हो गयी है। न्याय के लिए अब समझौता नहीं सीधे संघर्ष की बात होती है। भोलाभाला गांव अब सयाना बन चुका है।

तृतीय अध्याय:-

इसमें शिवमूर्ति की कहानियों में ग्रामीण-जीवन की अभिव्यक्ति पर कार्य किया गया। यह पूर्ण रूप से शिवमूर्ति की कहानियों पर आधारित है। शिवमूर्ति के सबसे प्रारंभिक स्तम्भ के रूप में सम्मिलित कहानी से लेकर अत्यंत नई कहानी तक को सम्मिलित किया गया है। शिवमूर्ति की कहानियों में अभिव्यक्त ग्रामीण-जीवन के यथार्थ को तलाशा गया है। इस अध्याय को इन तीन बिंदुओं के अंतर्गत पूरा किया गया है- (1). पारिवारिक स्थिति, (2). सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति, (3). आर्थिक स्थिति। भारतीय ग्रामीण-जीवन के इन तीनों महत्वपूर्ण घटकों का शिवमूर्ति की कहानियों के माध्यम से अनुशीलन किया गया।

निष्कर्ष:-

साहित्य की विधाओं में कहानी विधा बहुत महत्वपूर्ण और सारगर्भित है जिसमें जीवन के अपरिलक्षित सत्य उद्घाटित होते है। शिवमूर्ति जी की कहानियों में विभिन्न वर्ग समुदाय के उन महत्वपूर्ण अंगों को रेखांकित किया गया है। जिससे क्रांति और परिवर्तन के चक्रवात उठते दिखाई पड़ते हैं।

चतुर्थ अध्याय:-

यह शिवमूर्ति के उपन्यासों पर आधारित है जिसके अंतर्गत शिवमूर्ति के उपन्यासों में ग्रामीण-जीवन की अभिव्यक्ति पर कार्य किया गया। इसमें शिवमूर्ति के सभी उपन्यासों को आधार बनाया गया। इनके उपन्यासों में भारतीय ग्रामीण जीवन किस रूप में उपस्थित है इसे देखा गया है। इस अध्याय को भी तीन उपखंडों में विभाजित किया गया- (1). पारिवारिक स्थिति, (2). सामाजिक व राजनीतिक स्थिति, (3). आर्थिक स्थिति।

निष्कर्ष:-

इनके उपन्यासों में जीवन की सम्पूर्ण कलाओं को बड़ा आकार प्रदान किया गया है। चाहे वह विभीषिका की भीषण त्रासदी हो, चाहे राजनीति में छल, छद्म का आवरण हो, चाहे ग्रामीण किसानों का दर्द हो सब एक कैनवास में जैसे पिरो दिए गए हों।

पंचम अध्याय:-

यह अध्याय शिवमूर्ति के कथा-साहित्य के शिल्पगत स्वरूप पर आधारित है। इसके अंतर्गत शिवमूर्ति के उपन्यासों

एवं कहानियों के शिल्प-सौंदर्य एवं भाषा-सौंदर्य पर कार्य किया गया है। इस अध्याय को चार उपखंडों में विभाजित किया गया है- (1). शिवमूर्ति की कहानी-कला की विशेषताएं, (2). शिवमूर्ति के उपन्यास-कला की विशेषताएं, (3). शिवमूर्ति के कथा-साहित्य के शिल्प के विविध आयाम, (4). शिवमूर्ति की कहानी-कला और उपन्यास-कला पर पाश्चात्य प्रभाव।

निष्कर्ष:- इनके साहित्य का अध्ययन भाषा की दृष्टि से करने पर यह समझ में आता है कि इन्होने पात्रों के माध्यम से वैसे ही शब्द प्रस्फुटित कराएं है जैसा ग्रामीण बोली का लहजा होता है। बोली व भाषा सब कुछ ग्रामीण पृष्ठभूमि से जुड़ी हुई दिखाई पड़ती है। अवधि भाषा का टोन साहित्यकार और पाठक को बांधें रखने में कामयाब रहता है। देशकाल वातावरण सभी परिस्थितियों में शिवमूर्ति की शैली लाजवाब है। चाहे कहानी हो या उपन्यास दोनों के पात्र जीवन्त रूप में अपनी मिट्टी से जुड़े हुए दिखाई पड़ते हैं।

उपसंहार:-

विविधता को लिए शिवमूर्ति जी का कथा साहित्य आज के परिप्रेक्ष्य में कितना खरा उतरता है यह पाठक वर्ग के गहन चिंतन पर निर्भर करता है। ग्रामीण अवधारणा को पिरोने, उसे नए आयाम तक ले जाने में शिवमूर्ति जी कहाँ तक सफल हुए हैं? यह चिंतकों और शोधार्थियों के लिए यक्ष प्रश्न है। ग्राम्य जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं, गरीब, वंचित व पिछड़ो के साथ सामंजस्य कितना हो पाया है? वर्ग-भेद, जाति-भेद से क्या अब भी गांव उबर पाया है? यह चिंतन-मनन के धरातल पर समानता को लाने वाली अवधारणा और उसके संवाहको पर निर्भर करता है। हालांकि इक्कीसवीं सदी के भारत में गांव, नगरों के समतुल्य होता दिखाई पड़ रहा है। इनके कथा साहित्य में ये झलकियां देखने को मिलती हैं। भूमंडलीकरण, मंडलीकरण व कमण्डलीकरण जैसी विचारधाराएँ आम-जन को अत्यधिक प्रभावित करने में सफल हो रही हैं। शिवमूर्ति के पात्र चाहे शनिचरी हो, चाहे कुच्ची हो या चाहे 'त्रिशूल' उपन्यास के महमूद ये सभी पात्र अनेक सामाजि, राजनीतिक विषमताओं को झेलते हुए अपने हक और अधिकार के लिए आवाज बुलंद करते दिखाई पड़ते हैं। इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि अब ग्रामीणांचल में भी समानता के भाव ने दस्तक दे दी है। अतः शिवमूर्ति जी की अवधारणा को लेकर मैंने अपने शोध को उचित आकार दिया है।

संदर्भ-ग्रंथ

सहायक सन्दर्भ-ग्रन्थ

आधार ग्रंथ-

1. शिवमूर्ति : केशर कस्तूरी (कहानी संग्रह), राधाकृष्ण पेपरबैक्स-दिल्ली, संस्करण-2007

2. शिवमूर्ति : कुच्ची का कानून (कहानी संग्रह), राजकमल पेपरबैक्स-दिल्ली, पहला संस्करण-2017

3. शिवमूर्ति : त्रिशूल (उपन्यास), राजकमल पेपरबैक्स-दिल्ली, पहला संस्करण - 2012

4. शिवमूर्ति : तर्पण (उपन्यास), राजकमल पेपरबैक्स -दिल्ली, संस्करण-2010

5. शिवमूर्ति : आखिरी छलांग (उपन्यास), नया ज्ञानोदय (संपादक - रवींद्र कालिया), अंक-159, जनवरी-2008, भारती ज्ञानपीठ- दिल्ली

6. शिवमूर्ति : अगम बहे दरियाव (उपन्यास), राजकमल पेपरबैक्स-दिल्ली, पहला संस्करण- 2023

सहायक संदर्भ ग्रंथ-

1. शिवमूर्ति - सृजन का रसायन, राजकमल प्रकाशन (प्राइवेट लिमिटेड) - दिल्ली, पहला संस्करण-2014

2. संपादक-सुशील सिद्धार्थ - शिवमूर्ति : मेरे साक्षात्कार, किताबघर प्रकाशन - दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2013

3. संपादक - संजय वाले : वंचितों के प्रवक्ता, अमन प्रकाशन-कानपुर, प्रथम संस्करण- 2019

4. जॉर्ज डेविस - शिवमूर्ति के साहित्य में सामाजिक चेतना, जवाहर पुस्तकालय-मथुरा, प्रथम संस्करण-2021

5. बिपिनचंद्र - आजादी के बाद भारत, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय- दिल्ली विश्वविद्यालय -दिल्ली , संस्करण-2000

6. रामचंद्र गुहा - नेहरू के बाद भारत, पेंगुइन बुक्स - इंडिया, संस्करण-2012

7. रामचंद्र गुहा - गांधी के बाद भारत, पेंग्विन बुक्स - इंडिया, संस्करण-2010

8. शिवनारायण सिंह 'अनिवेद' - आधुनिक भारत की द्वंद्वकथा, वाणी प्रकाशन- दिल्ली, संस्करण- 2005

9. गिरीश मिश्र - उपभोक्तावाद , ग्रंथशिल्पी प्रकाशन- दिल्ली, संस्करण - 2014

10. ज्याँ द्रेज, अमर्त्य सेन- भारत और उसके विरोधाभास, राजकमल प्रकाशन (प्राइवेट लिमिटेड)- दिल्ली, संस्करण- 2019

11. कमलनयन काबरा - समकालीन भारत : सवाल और सरोकार, शुभदा प्रकाशन- दिल्ली, संस्करण- 2017

12 . कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंगल्स (अनु.रमेश सिन्हा) - कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र, ग्रंथशिल्पी प्रकाशन- दिल्ली, संस्करण- 2000

13. संपादक - उर्मिलेश - उदारीकरण और विकास , अनामिका पब्लिशर्स- दिल्ली, संस्करण - 2010

14. अमर्त्य सेन - न्याय का स्वरूप, राजपाल एंड संस - दिल्ली, संस्करण-2014

15. अमर्त्य सेन - भारतीय अर्थतंत्र , इतिहास और संस्कृति, राजपाल एंड संस - दिल्ली, संस्करण -2013

16. अमर्त्य सेन- आर्थिक विकास और स्वतंत्र, राजपाल एंड संस - दिल्ली, संस्करण - 2016

17. सुनील खिलनानी (अनुवाद-अभय कुमार दुबे) - भारतनामा, राजकमल प्रकाशन (प्राइवेट लिमिटेड) - दिल्ली, संस्करण-2008

18. पवनकुमार वर्मा (अनुवाद-अभय कुमार दुबे) - भारत के मध्यवर्ग की अजीब दास्तान, राजकमल प्रकाशन (प्राइवेट लिमिटेड) - दिल्ली, संस्करण - 2009

19. परिमल कर - समाजशास्त्र : सामाजिक अंतक्रियाओं का अध्ययन, जवाहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूशन- दिल्ली, संस्करण - 2006

20. ए.आर.देसाई (अनुवाद- हरीकृष्ण रावत), भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र , रावत पब्लिकेशन -जयपुर, संस्करण- 2012

21. संपादक - उत्तरा यादव : ग्रामीण-नगरीय समाजशास्त्र, ओरियंट ब्लैकस्वान (प्राइवेट लिमिटेड)- दिल्ली

22. योगेंद्र सिंह (अनुवाद-अरविंद कुमार अग्रवाल) - भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण, रावत पब्लिकेशन- जयपुर, संस्करण- 2000

23. श्यामाचरण दुबे (अनुवाद-वंदना मिश्र)- भारतीय समाज, नेशनल बुक ट्रस्ट- दिल्ली, संस्करण- 2001

24. अमर कुमार - योगेंद्र सिंह का समाजशास्त्र, रावत पब्लिकेशन- जयपुर, संस्करण- 2005